बाल-साहित्य समीक्षा

बच्चों के गुलजार

पल्लव

यह अचरज भरी बात है कि हिन्दी में बच्चों के लिए मुख्यधारा के कुछ ही लेखक लिखना आवश्यक मानते हैं, वहीं हिन्दी से इतर दुनिया के अनेक बड़े लोगों ने इसे जरूरी समझा है। भारत के राष्ट्रपति रहे जाकिर हुसैन और मशहूर फिल्मकार गुलजार ऐसे उदाहरण हैं। गुलजार ने अपनी बिटिया बोसकी (जो अब स्वयं एक समर्थ फिल्मकार के रूप में प्रशंसित हैं) के हर जन्मदिन पर एक किताब का उपहार दिया था। यह उपहार ऐसा था जिसमें गुलजार खुद एक नई किताब लिखते और छपवाकर बिटिया को देते। बिटिया बड़ी हो गई और अपनी राह बनाई लेकिन ये किताबें आज भी हजारों बच्चों को आनन्द देने में समर्थ हैं, उनके काम की हैं। सोचिए तो कैसा अनोखा उपहार है जो सालों बाद भी बना हुआ है और उस उपहार का आनन्द गुलजार की बिटिया के साथ और कितने बच्चे ले सकते हैं।

पहली किताब है-‘बोसकी’, जो बोसकी के पहले जन्मदिन पर आई थी। तब बोसकी तुतलाकर बोलती होगी या न भी बोलती हो तो उससे तुतलाहट सुनना गुलजार को भाता हो। यही कारण है कि यह किताब ठेठ बोसकी की बोली में है। जैसे- ‘छब पूछते थे आपका नाम क्या है, तो मां मेघना-मेघना बोल देती थीं। बछ वही नाम लख दिया। लेकिन आप ऐछे लेछम जैछे मुलायम-मुलायम लगते थे कि हम तो बोछकी बुलाने लग गए। बोछकी एक बहुत ही मछहूल लेशमी कपले का नाम है। मालूम?’ फिर यही नहीं आखिर बोसकी क्यों विशिष्ट है? क्यों हर संतति अपने पिता या मां के लिए विशिष्ट है? इसका उत्तर भी इस किताब में देखिए- ‘आपको मालूम है, दुनिया में लॉज कितने बच्चे पैदा होते हैं? हल मिनट में एक बच्चा पैदा होता है। शौ छालों शे हो रहा है, लेकिन तेलह दिछम्बल उन्नीश छौ तिहत्तल का वह एक मिनट, एक छैकंड हमाला था। जब हमाला बच्चा पैदा हुआ। हमाली बोछकी पैदा हुई। जो इछ शे पहले करोलों शालों छे इनछान के इतिहाछ में नहीं हुआ था। इनछान थे, दुनिया थी, इतिहाछ था, लेकिन बोछकी नहीं थी, हमाली बोछकी!’

इस तुतलाहट भरी भाषा में गुलजार ने कैसे नए शब्द बनाए हैं। एक सज्जन जो बोसकी के चाचा भी हैं, मामा भी हैं तो उन्हें क्या कहा जाए? गुलजार बताते हैं- चामा। इस किताब में पांच कविताएं और पहेलियों का एक पन्ना भी है। ‘मॉडेल’ कविता की पंक्तियां हैं-

‘बिट्टू रानी बोसकी, बूंद गिरी है ओस की/अभी अभी तो हुई थी यह, पोली-सी बस रुई थी यह
और अब देखो ऐसी सयानी, लगती है राखी की नानी / बाहर रोब जतलाता हूं, सामने आऊं तुतलाता हूं’

बताइए क्या यह सिर्फ बोसकी और गुलजार की कहानी है?

दूसरी किताब गिनती की है। बोसकी ने गिनती सीखी। लेकिन कैसे? ऐसे की गिनती के हर अक्षर पर एक कविता। यह अनूठा विचार है और इस पर अनेक लोगों ने काम किया है लेकिन इस गिनती की बात खास है

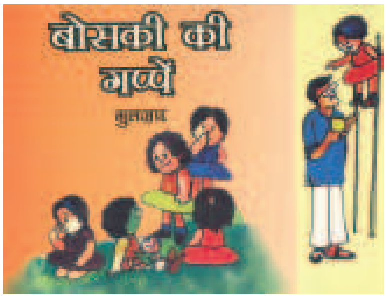

क्योंकि यहां गिनती के बहाने गुलजार हिन्दुस्तान की रवायतें बिटिया को बता रहे हैं। उसे जैसे पूरा भारत दिखा रहे हैं- समझना या न समझना और फिर मानना या न मानना बोसकी के हिस्से।

बच्चे अच्छे सच्चे नेक/बोसकी ने कहना सीखा एक/दूर को 'उस' और पास को 'इस'
बोसकी लिखती है चौंतीस/ईसाई थे सेंट फ्रांसिस/बोसकी लिखती है सैंतीस
Eiffel Tower is in Paris/बोसकी लिखती है उनतालीस/अंकल मेराज और इदरीस
बोस्की सीखी छयालीस/बारिश लेकर आया सावन/बोसकी बोलती है इक्यावन
बड़ा बुढ़ापा छोटा बचपन/बोसकी बोलती है अब पचपन/कैसी कैसी बातें? अंग्रेजी से भी परहेज नहीं।

तीसरी किताब है 'बोसकी की गप्पें', बच्चों में बात बनाने की अद्‌भुत कला होती है चाहे मुख पर माखन लिपटा हो तब भी बच्चा ही कह सकता है 'मैं नहि माखन खायो', तो बोसकी कैसे न गप्पें मारे भला? अब बोसकी थोड़ी बड़ी हो गई है इसलिए वह खुद यहां अपने दोस्तों को गप्पें सुना रही है। बोसकी चाहती है कि बाबूजी कोई मॉडर्न कहानी लिखें लेकिन बंटी भी है दोस्तों में जो सच कह सकता है- 'माफ करना बोसकी, तुम्हारे बाबूजी लिखते तो अच्छा हैं लेकिन दिल के चक्कर में रहते हैं- सीधे सब्जेक्ट पर नहीं आते। बात की कविता बना देते हैं।' अब गप्पों पर आएं तो यहां कुछ कहानियां हैं और कुछ कविताएं। यह हो ही सकता है कि मुर्गी बार-बार प्लेट में मुंह मारे और बोसकी के पापा परेशान होकर आम की गुठली दे मारें। गुठली पीठ पर चिपकी रह जाए। अगले दिन बरसात हो और मुर्गी की पीठ पर पेड़ उग जाए। बच्चे आम खाने जब ढेले मारें तो इतनी मिट्टी मुर्गी की पीठ पर जमा हो जाए कि मैदान बन जाए। तो ऐसा ही है बोसकी का संसार। इसमें कविताएं न हों यह कैसे हो सकता है?

चींटी चली स्पेस में हाथ में रॉकेट थाम/गुठली फेंके मार्स पर और चांद पे चूसे आम

बोसकी धीरे-धीरे बड़ी हो रही है तो नए-नए शौक भी होंगे। तो बोसकी ने कौआ पाला और किताब बनी पापा की- 'बोसकी का कौआनामा' बोसकी को एक घायल कौआ मिला और फिर वह बोसकी का साथी हो गया। तो इस कौए के बहाने रोज कोई न कोई कहानी सुनानी होती थी जो कौओं की हो। घड़े में पानी वाली कहानी सुनकर बोसकी ने जो किया वह ध्यान देने योग्य है- छत पर आधा भरा मटका रखा और पास में छोटे-छोटे पत्थर। आगे और कई कहानियां सुनी गईं और कौए का नामकरण भी हुआ। आखिर एक दिन कौए महाराज उफुक की तरफ उड़ गए। छत पर आधा भरा मटका पड़ा है। कुछ कंकर भी। गुलजार ने लिखा है- 'जब कभी बोसकी टोस्ट खाती है तो अकबर का हिस्सा छत पर छोड़ आती है। कहती है, 'अकबर किसी दिन आएगा जरूर बाबूजी... जब आएगा न...' यह कहते-कहते उसकी आवाज रुंध जाती है, आंखें भर आती हैं।

अगले जन्मदिन पर यह समस्या आई कि गिनती हुई, गप्पें हुईं, कौए हुए अब आगे क्या? जीवन अनंत है तो साहित्य के विषय भी थोड़े कैसे हो सकते हैं? अगले जन्मदिन पर पापा गुलजार ने किताब लिखी 'बोसकी के ब्राह्मण', और इसमें पांच बिरहमनों की कथाएं लिखीं। उर्दू में ब्राह्मण बिरहमन हुए- 'एक बिरहमन ने कहा है कि ये साल अच्छा है।' यहां कुंए से निकालकर कुछ जानवरों की जान बचाने वाली कथा, सत्तू की हांडी पर लात चलाने वाले सोम शर्मा के पिता की कथा, चुहिया को बेटी बनाने वाले ब्राह्मण की कथा, नेवले वाली कथा और ज्ञानी ब्राह्मणों द्वारा बिखरी हड्डियों को जीवित शेर बनाने की कथाएं हैं। कथाएं पुरानी हैं लेकिन कहने-सुनाने का अंदाज नया है। फिर इनमें जहां तहां गीतात्मकता है, जो बच्चों को भाती है। आखिरी कथा की आखिरी पंक्तियां हैं-

ताकत जिसका तोड़ न हो/शक्ति जो अपनी शक्ति से ज्यादा हो/ऐटमबम हो या हो शेर
जब भी वो ईजाद करोगे, नाश करेगी।/ज्ञान की शक्ति मानता हूं/शक्ति का ज्ञान जरूरी है।

क्या ये शक्ति का ज्ञान करवाने का उपक्रम है? शायद नहीं। गुलजार सीख देने में विश्वास नहीं रखते। घटनाओं और कथ्य का रोचक प्रस्तुतीकरण ही उनके लिए पर्याप्त है। बोसकी खुद भी सबक मजे में लेती है- 'बोसकी ने सबक निकाला कि पेड़ पे बैठके टोस्ट नहीं खाना चाहिए और यह कि लोमड़ी बहुत चालाक जानवर है।'

ब्राह्मणों की कथाएं पूरी हुई। अब आई धनवानों की बारी। किताब बनी- 'बोसकी के धनवान', जिसमें चार कथाएं हैं। धन की कामना और उसके लिए की जाने वाली कोशिशों की कथाएं। ये कोशिशें भली हैं, बुरी हैं लेकिन गुलजार नसीहत

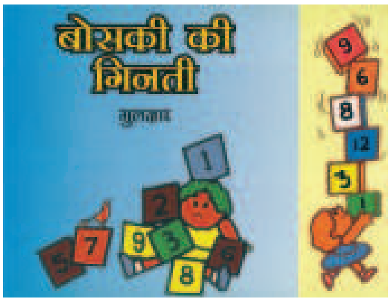

के फेर में नहीं पड़ते। आखिरी कहानी का निष्कर्ष ही है- 'कहा अपना अच्छा-बुरा आप समझो नसीहत सुनो सबकी अपनी करो।' धन के लालच में माथे पर शनि चक्र लेकर भटकने वाले आदमी की कथा इसमें है तो जैसे को तैसा करने वाली कथाएं भी। नकल में भी अकल की जरूरत क्यों और कैसे होती है यह तीसरे धनवान की कथा बताती है जो एक साधु के सर पर डंडा मारकर धनवान हो गया था।

'बोसकी की सुनाली' एक हैंस क्रिश्चियन एंडरशन की कहानी सुनाली का ऐसा पुनः प्रस्तुतीकरण है जिसमें कहानी किसी एक देश, भाषा या भूगोल तक सीमित नहीं रह जाती। बोसकी नौ साल की हो गई है और यह नौवीं किताब उल्लास की नहीं अवसाद की है। सुनाली भयानक ठण्ड में रजाई, खिलौने और खाने की आशा में एक बर्फ ओढ़े शहर में सदा के लिए सो जाती है। इस किताब की भूमिका में गुलजार ने लिखा है- 'सिर्फ परियां और पंछी ही नहीं, कहानियां भी उड़ती हैं- उनके भी पर लगे होते हैं। खासतौर पर कहानियां, जो मासूम फरिश्तों की तरह देश-देश में जाती हैं और एक देश के बच्चों को दूसरे देश के बच्चों से मिलाती हैं, उनके संदेश पहुंचाती हैं, दोस्तियां कराती हैं। जिन देशों में हम रहते हैं, वे तो घरों की तरह हैं और दुनिया एक बहुत बड़ा देश है जिसे हम जमीन कहते हैं।'

बोसकी अगर बड़ी हो रही है तो उसे उपन्यास भी चाहिए। गुलजार ने लिखा- 'बोसकी के कप्तान चाचा', देश के झंडे के लिए लड़ने-भिड़ने वाले कप्तान चाचा की कहानी। इस उपन्यास में बम्बई (अब मुंबई) की एक चाल में रहने वाले लोगों और उनके साथ रह रहे मिलिट्री से रिटायर्ड एक कप्तान की है जो भारत चीन युद्ध में एक पैर पर गोली खा चुके हैं। 26 जनवरी आने को है और चाचा चाहते हैं कि चाल में सामूहिक रूप से झंडा फहराया जाए। घर-घर भी फहरे। इस काम में बच्चों की पूरी सेना शामिल है। लेकिन एक विवाद होता है और पुलिस थाने में चाचा बंद हो जाते हैं। आखिर चाचा आते हैं और झंडा फहराया जाता है। लड्डू खाए जाते हैं। छोटा-सा यह उपन्यास जाने कितने चरित्रों से मिलवाता है तो बच्चों के उत्साह का बयान भी करने में समर्थ हुआ है। 'बोसकी के ताल-पाताल' भी एक औपन्यासिक कहानी है लोक कथा पर आधारित। नागों की कहानी। एक नाग और नागिन के प्रेम और उनके मिलन-विरह की कहानी। 'बोसकी का पंचतंत्र' सबसे बड़ी और पंचतंत्र की कहानियों वाली किताब है जिसमें से अधिकांश कहानियां पिछली पुस्तिकाओं में आई हैं। यह समग्र जैसा है इसलिए है- बोसकी का पंचतंत्र।

इन किताबों से गुजरो तो मालूम होता है गुलजार बच्चों से संवाद किस तरह करते हैं और इस संवाद का कुल हासिल कितना बड़ा है। यह जो बड़ा है वह असल में बच्चों से संवाद करना है, उनके भीतर प्रश्नाकुलता उत्पन्न करना है। उन्हें अपना व्यक्तित्व खुद बनाने के लिए प्रेरित करना है। जाहिर है इनमें अधिकांश वह है जो मूल लेखन नहीं है बल्कि लोककथाओं का पुनर्सृजन है। गुलजार ने लिखा था- 'हमारी दादी ये कहानियां सुनाया करती थीं- मिर्च-मसाले लगाकर। मैंने सिर्फ इतना किया है, कुछ और नमक-मिर्च लगाकर आपके लिए किताब के इस फ्रिज में रख दी है। आप माशाअल्लाह दादी बनेंगी तो निकाल-निकाल के अपने पोते-पोतियों को पेश करना लेकिन ऐसी की ऐसी नहीं, मैंने अपने वक्त का नमक लगाया है, आप अपने वक्त का लगाना।' एक दूसरी किताब में गुलजार ने बोसकी को लिखा है- 'और हम लिखेंगे नहीं तो आप पढ़ेंगे कहां से?' तो कोई है जो जिम्मेदारी समझता है। इन किताबों में खूब बातें हैं, गप्पें हैं और किस्से हैं जिन्हें गुलजार साहब कभी कविता जैसा बना देते हैं तो गप्प को गप्प जैसा भी रहने देते हैं। कहीं कहानी कहने का नया अंदाज है तो कहीं बात बात में बात। इरादा यह कि पढ़ने या सुनने वाले को आनन्द मिले। सीख मिले तो भला न मिले तो यह भी सीख ही हुई।

इन सब किताबों को हिन्दी के प्रसिद्ध राधाकृष्ण प्रकाशन ने छापा है और सुन्दर साज-सज्जा के साथ, तब भी कहने का मन है कि ये और बेहतर बन सकती थीं। प्रूफ की एक गलती ऐसी है जो बहुत खटकती है किताब के शीर्षक में कहीं बोसकी है तो कहीं बोस्की। लेकिन हम इन किताबों को उनके प्रस्तुतीकरण के लिए नहीं उनके पाठ के लिए याद रखेंगे और इनमें आई छोटी-छोटी बातें कैसे भूलें, जैसे- 'सयाने लोग बड़ी मुश्किल से मोह में पड़ते हैं।' ◆

लेखक परिचयः लगभग एक दशक से हिन्दी साहित्य का अध्यापन, हिन्दी की लघु पत्रिका 'बनास जन' के संपादक। संप्रतिः हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्राध्यापक हैं।